Psychology MJC+MIC -3 Semester- 3

परिवार के कार्य

Functions of Family

1. परिवार के मूल कार्य 2. परिवार के सामान्य कार्य

3. परिवार के शैक्षिक कार्य

डॉ०अमर भारती सहायक प्राध्यापक

POSTER MAKER Poster Maker

3) परिवार के शैक्षिक कार्य (Educational Functions of Family)

i) **शारीरिक विकास**–मनुष्य के जीवन की अनिवार्य आवश्यकता शरीर का स्वास्थ्य और उसका समुचित विकास है। सामान्यतः कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता है। अतः बालक के शारीरिक स्वास्थ्य एवं विकास के लिए पौष्टिक, सन्तुलित भोजन तथा नियमित दिनचर्या का प्रबन्ध किया जाना चाहिए। परिवार बालक के शारीरिक विकास के लिए वस्त्र पौष्टिक भोजन, मनोरंजन, व्यायाम, उचित वातावरण, खेलकूद, चिकित्सा और विश्राम आदि की व्यवस्था करता है। अतः परिवार का सर्वप्रथम शैक्षिक उद्देश्य एवं कार्य बालक का शारीरिक विकास है।

ii) **मानसिक विकास**–बालक की मानसिक शक्तियों, रुचियों और प्रवृत्तियों के निर्माण एवं विकास में परिवार का वातावरण महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता है, क्योंकि बालक के मानसिक विकास की आधारशिला जिज्ञासा और कल्पना–शक्ति होती है। अतः परिवार का शैक्षिक दायित्त्व है कि वह यथोचित उत्तर के माध्यम से बालक की जिज्ञासा और उत्सुकता को शान्त करें एवं उनका दमन न करें। बौद्धिक विकास की दृष्टि से परिवार का भी कर्तव्य है कि वह बालक को सर्वोत्तम एवं वांछित साहित्य उपलब्ध कराएं। वस्तुतः बालक की निरीक्षण, परीक्षण, कल्पना, चिन्तन, विचार आदि मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण परिवार से ही प्रारम्भ हो जाता है।

iii) **चारित्रिक एवं नैतिक विकास**–बालक के चारित्रिक एवं नैतिक विकास की आधारशिला घर–परिवार में ही रखी जाती है। बालक में प्रारम्भ से ही अनुकरण करने की आदत होती है। अतः परिवार के सदस्यों का कर्तव्य है कि वे बालक में उत्तम चरित्र और नैतिक मूल्यों के निर्माण के लिए न्याय, सत्य, प्रेम, उदारता, दया, सहानुभूति, शिष्टाचार सहिष्णुता तथा श्रद्धा की भावना जगाएँ। वास्तव में बालक के नैतिक–चरित्र की रूपरेखा विद्यालय जाने से पूर्व छोटी अवस्था में ही घर पर ही बन जाती है। अतः गृह–शिक्षा के द्वारा संचालक के चारित्रिक एवं नैतिक विकास पर मुख्य रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

iv) **भावात्मक और सांस्कृतिक विकास**–परिवार का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य एवं कार्य बालक का भावात्मक एवं सांस्कृतिक विकास है। बालक में घर की सफाई तथा साज–सज्जा द्वारा कलात्मक विषयों के प्रति रुचि जाग्रत की जानी चाहिए। साहित्य, संगीत और कला आदि में विशेष रुचि रखने वाले परिवार के बालकों में भावात्मक प्रवृत्तियाँ अवश्य ही देखने को मिलती हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक समाज की संस्कृति के संरक्षण तथा हस्तान्तरण का पहला और सार्थक कार्य परिवार के माध्यम से ही सम्भव है। परिवार में रहते हुए बालक सहज रूप से और अनजाने में ही संस्कृति को ग्रहण कर लेता है। अतः बालक के भावात्मक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए परिवार का वातावरण सदाचरण से युक्त होना चाहिए।

v) **आदत, रुचि एवं पसन्द का विकास**–बालक में अच्छी–बुरी आदतों, रुचियों एवं पसन्दों का विकास परिवार में ही होता है। घर के सदस्यों की आदतों को देखकर बालक अनजाने में ही उन्हें ग्रहण कर लेता है।

vi) **धार्मिक शिक्षा**–बालक का पूर्ण नैतिक–चरित्र धार्मिक शिक्षा के अभाव में विकसित नहीं हो सकता। एक धर्मनिरपेक्ष लोकतन्त्र में परिवार का मुख्य कार्य शैक्षणिक कार्य होने के कारण हमारे देश में धार्मिक शिक्षा देने के लिए परिवार का उत्तरदायित्त्व मुख्य रूप से बढ़ गया है। परिवार में धर्म–ग्रन्थों को पढ़ने, धार्मिक कथाएँ सुनने, पूजा–अर्चना तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में भावात्मक एवं सांस्कृतिक रूप से सम्मिलित होने के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं। घर की सुन्दर व आकर्षक वस्तुओं में बालक की रुचि अधिक होती है। इसी प्रकार बालक की अलग–अलग वस्तुओं के प्रति पसन्द या नापसन्द भी पारिवारिक वातावरण पर निर्भर करती है। अतः यह आवश्यक है कि अच्छी आदतों, रुचियों एवं पसन्द के विकास के लिए अभिभावकगण अपने बालकों के सम्मुख श्रेष्ठ उदाहरण ही प्रस्तुत करें।

vii) **व्यक्तित्त्व का विकास**–बालक के व्यक्तित्त्व के शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, सांवेगिक, नैतिक तथा सामाजिक आदि अलग–अलग पक्षों का विकास परिवार के मध्य रहकर ही होता है। बाल्यावस्था के अच्छे संस्कारों का प्रभाव स्थायी होता है और यह बालक के व्यक्तित्त्व को सन्तुलित एवं सुन्दर बनाता है। वस्तुतः पारिवारिक शिक्षा बालक के व्यक्तित्त्व का भावी विकास स्वरूप एवं दिशा निर्धारित करता है।

viii) **सामाजिक भावना का विकास**–परिवार एक छोटा–सा समाज है जो बालक को सामाजिक आदर्श एवं परम्पराओं के आदर्श तथा आचरण एवं व्यवहार के तरीके सिखाता है। पारिवारिक वातावरण में ही बालक को सर्वप्रथम सहयोग, सद्भावना, न्याय तथा अन्याय की अनुभूति होती है। अतः परिवार ही बालक के सामाजिक जीवन का प्रथम शैक्षिक केन्द्र है, जहाँ उसमें अभीष्ट सामाजिक भावनाओं का विकास होता है।

ix) **व्यावसायिक विकास**–पारिवारिक उद्देश्य और कार्य यह भी है कि वह बालक की व्यावसायिक रुचियों और अभिरुचियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन कर उसे उचित व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करे। प्रायः बालक की व्यावसायिक रुचियों व आकांक्षाओं की जितनी अधिक जानकारी उसके परिवार के सदस्यों को हो सकती है, उतनी समाज के अन्य व्यावसायिक और प्रशिक्षण संस्थाओं को नहीं हो सकती। प्राचीनकाल में आयु बढ़ने के साथ–साथ बालक के पैतृक व्यवसाय में हाथ बँटाकर प्रशिक्षण प्राप्त करता था और इस प्रकार व्यक्ति कुशलता प्राप्त कर लेता था।